लंपी / गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी)

पशु औषधि विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय आर एस पुरा

शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय जम्मू

लंपी / गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी)

- गांठदार त्वचा रोग (एलएसडी) गाय और भैंसों का एक संक्रामक वायरल रोग है, जो पॉक्सविरिडे परिवार के कैप्रीपॉक्स वायरस के कारण होता है।
- यह रोग चिच्ड, मक्खियों, मच्छरों, पिस्सू, मिज के द्वारा काटने से फैलता है।

लंपी त्वचा रोग के लक्षण

- 2-3 दिनों के लिए हल्का बुखार होना
- वजन का कम होना
- लार निकलना
- आंख और नाक का बहना
- अंगों की सूजन
- दूध का कम होना
- शरीर पर अलग-अलग तरह के नोड्यूल /, त्वचा पर घाव बनना

- शरीर पर गांठें बनना
- लिम्फ नोड्स का बढ़ना
- बांझपन /गर्भपात,
- निमोनिया
- लंगड़ापन

लंपी त्वचा रोग की जांच

- एलएसडी संदिग्ध पशुओं के खून की जांच, त्वचा का नमूना भा.कृ.अनु.प-निहसाद, भोपाल भेजा जाना चाहिए।

- जिस स्थान पर इस बीमारी के लक्षण दिखे, बीमारी से ग्रस्त पशुओं की संख्या और मृत्यु दर आदि जानकारी पशुपालन और डेयरी विभाग भारत सरकार को दिए गए परफॉर्मए के अनुसार भेजनी चाहिए।

इलाज

- बीमार जानवरों को अलग रखा जाना चाहिए।
- पशु चिकित्सक की सलाह से प्रभावित पशुओं का उपचार किया जाना चाहिए।
- इसमें एंटीबायोटिक दवाओं (एनरोफ्लोक्सासिन / स्ट्रेप्टोपेनसिलीन आदि), ज्वरनाशक (मेलोक्सिकैम, फ्लुनिक्सिन, टॉल्फेनैमिक एसिड, एनलगिन) , मल्टीविटामिन और एंटीहिस्टामाइन से उपचार 5-7 दिनों के लिए किया जाना चाहिए।
- त्वचा पर होने वाले जख्मों पर एंटीसेप्टिक मरहम लगाने और मक्खी को भगाने वाली दवाओं का छिड़काव करना चाहिए।
- होम्योपैथिक दवाएं वैरियोलिनम (उपलब्धता 30 मिली शीशी): 0.5 मिली 1 लीटर पानी में मिलाएं और 50 मिली औषधीय पानी प्रत्येक जानवर को 10 दिनों के लिए पिलाएं । वैरियोलिनम का उपयोग रोकथाम और रोग नियंत्रण के लिए किया जाता है।
- एक अन्य दवा हेपरसल्फर (उपलब्धता 30 मिली शीशी): 0.5 मिली 1 लीटर पानी में मिलाएं और 50 मिली औषधीय पानी प्रत्येक जानवर को 10 दिनों के लिए पिलाएं ।
- बीमार जानवरों को तरल भोजन, नरम और रसीला चारा खिलाएं।
- एलएसडी ग्रस्त पशु की मृत्यु होने पर पशु के शव को गहरा दबाकर निपटाए।

रोकथाम और नियंत्रण:

- बीमार/संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग करना चाहिए।
- बीमार पशुओं का एक जगह से दूसरी जगह ले जाना वर्जित होना चाहिए ।
- बीमारी से ग्रस्त पशुओं को स्वस्थ जानवरों से अलग रखना चाहिए। जानवरों को बीमार और स्वस्थ जानवरों को अलग-अलग जगह पर बांधना और चराना चाहिए।
- पशुओं के बांधने के स्थान पर कीट (चिच्ड, मक्खियों, मच्छरों, पिस्सू, मिज) को भगाने के लिए प्रबंध किया जाना चाहिए।
- प्रभावित क्षेत्रों से मुक्त क्षेत्रों और स्थानीय पशु बाजारों में जानवरों की आवाजाही पर सख्त नियंत्रण लगाना चाहिए।

- प्रभावित क्षेत्रों में बीमारी की पुष्टि होने पर जीवित पशुओं के व्यापार और मेलों और शो में भाग लेने पर तुरंत प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए।
- प्रभावित जानवरों से नमूने लेने के दौरान उपयोग किए जाने वाले व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) आदि के निपटान के लिए सभी जैव सुरक्षा उपायों और सख्त स्वच्छता उपायों का पालन किया जाना चाहिए।
- संक्रमण के केंद्र के 10 किलोमीटर के दायरे में स्थित मवेशी बाजार बंद होने चाहिए।
- प्रभावित क्षेत्रों के कर्मियों, परिसरों, वाहनों और दूषित वातावरण की पूरी तरह से सफाई और रोग मुक्त करने के लिए कीटाणुनाशकों [ईथर (20%), क्लोरोफॉर्म, फॉर्मेलिन (1%), फिनोल (2%) के साथ किया जाना चाहिए।

टीकाकरण:

- संक्रमित गांवों की पहचान और प्रभावित गांव के आसपास 5 किलोमीटर के दायरे तक के गांवों में पशुओं का टीकाकरण किया जाना चाहिए।
- टीकाकरण 4 महीने से अधिक उम्र की स्वस्थ गाय और भैंसों में बाजार में उपलब्ध बकरी पॉक्स के टीके (भारतीय इम्यूनोलॉजिकल लिमिटेड द्वारा रक्षा बकरी का टीका) 4 मिलीमीटर सबकटेनियस मार्ग द्वारा लगाया जाना चाहिए।
- बीमारी से प्रभावित नर के वीर्य का एकत्र और उसका प्रयोग वर्जित होना चाहिए।

जागरूकता अभियान:

- किसानों को एलएसडी के लक्षणों और उस से होने वाले नुकसान के बारे में जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए ।
- बीमारी से संदिग्ध पशु देखते ही उसकी जानकारी जल्दी से जल्दी पशुपालन और डेयरी विभाग भारत सरकार और भा.कृ.अनु.प-निहसाद, भोपाल को दिए गए परफॉर्मए के अनुसार भेजनी चाहिए ।
- संदिग्ध मामलों का पता चलने पर पशु चिकित्सा प्राधिकरण को तुरंत सूचित किया जाना चाहिए।